



सूफीयों में संगीत की महत्ता :- एक अध्ययन



Tajinder Singh

Asst.Prof

सारांश -सूफी संतो, फकीरों व् दरवेशों ने सूफी काव्य को संगीतबद्ध कर ना केवल इस्लाम के प्रचार का साधन बनाया अपितु ईश्वर से मिलाप का एक सरल माध्यम भी माना ।

“Sufis had accepted MUSIC as a means of attaining union with God”¹

अर्थात् सूफीयों ने संगीत को प्रमात्मा से मिलाप का एक माध्यम माना है ।

प्रस्तावना-

आचार्य ब्रहस्पति जी लिखते हैं " शब्दों से चिपके रहने वाले मौलवी गाना , बजाना , नाचना , सर्वदा वर्जित समझते हैं , वहां ईश्वर के ध्यान में आत्म विस्मृत हो कर गाना , बजाना , नाचना , शेख जुनैन बगदादी (मृत्यु 911 ई.) शेख अबु बकर शिबली (मृत्यु 946 ई.) जैसे सूफीयों की दृष्टि में वैय ही नहीं अपितु आवश्यक भी है । "² शेख निज़ाम-उद - दीन ओलिया ने कहा है कि " जदो मैनु क्रयामत वेले सदा आवे तां ओ वी राग दी धुन विच होवे तां चंगा है । "³

सूफीयोंद्वारा संगीत को दिए प्रेम का सब से बड़ा सूचक उनकी अपनी रचनाओंमें कई सांगीतिकशब्दों का प्रयोग है , जैसे :-

अली हैंदर यार बजाने वाला, ताल भी तूं ते तान भी तूं	(अली हैंदर)
बँसी काहन अचरज बजाई	(बाबा बुल्लेह शाह)
अनहृद बाजा बजे शहाना, मुरतिभ सुघरा तान तराना	(बाबा बुल्लेह शाह)
*वाहे वंजली प्रेम दी घंट जाली.	(वारिस शाह)

इस प्रकार सूफीयोंने अपनी विचारधाराका प्रचार संगीत के माध्यम से किया इस बात का एक और ठोस प्रमाण मौलाना रुमी की 'मसनवी' से प्राप्त होता हैं जिसमें मौलाना रुमी बांसुरी का प्रमाण देते हुए अपना आध्यात्मिकविचार देते हुए कहते हैं

" विशानो अज्ज ना चुन हिकायत मीं कुंद,
न अज्ज जुदाईहा सहित मीं कुंद " ⁴

अर्थात बांसुरी को सुनो , इसकि आवाज बहुत ही करुणामय निकलतीहैं इसका कारन यह हैं की यह अपने मूल से जुदाई की शिकायत करती है |

उपरोक्त मिसरे से यह बात पूर्ण रूप से सपष्ट हो जाती है के सूफी संतो ने अपने विचारोंको कितनी खूबसूरती से संगीत के माध्यम से संगीत के माध्यम से व्यक्त किया |

सूफी फकीरोंद्वारा अपने सिद्धांतों व् विचारों का प्रचार - प्रसार किया व् इसको अल्लाह पाक के इलाही ज्ञान को जानने व् हृदये में बसा कर इस में ही लीन हो जाने का माध्यम मानते हुए अपनी खानगाहों च मजारों में " महफिल - ए - सामाइ " की परम्परा को विकसित किया .. ' सामाइ ' अभी भाषा का शब्द है , जिसका अर्थ है :- ' सुणन डा कर्जे ' , ' राग जां संगीत सुनना' ⁵

" Sama was not an ordinary worship , but had a extraordinary 'Power' which could take sufies away into the spiritual realm "⁶

अर्थात सामाइ एक साधारण पूजा नहीं बल्कि इसमें एक असाधारण शक्ति थी जो सूफीयों आध्यात्मिकक्षेत्र में दूर तक ले जाती थी..

" The Sama, signifies circular dance and qawwali (congregational singing) which is performed with a view to induce a state of ecstasy in sufies." ⁷

अर्थात ' सामाइ ' परिपत्रनृत्य व् कववाली (समूह गायन) का प्रतीक है .. जो सूफीयोंमें परमानंद (अल्लाहपाक) की सत्ता को प्रेरित करने के लिए प्रदर्शित किया जाता था |

" Sheikh Nizam - ud - din auliya grades ' SAMA ' into four categories – Halal (lawful), Haram (unlawful), Mabah (permissible), Makrooh (detestable),"⁸

अर्थात ' सामाइ ' हलाल (धार अनुसार) , हराम (धर्म विरुद्ध) , मोबाह (अनुमति योग्य) , मकरू (घृणा योग्य) भी हो सकता है .. इस लिए सामाइ में पर्तक किस्म के संगीत को ना-मंजूरीदी गई.. और सामाइ की कुछ एक शर्तें राखी गई ||
सूफीयोंने सामाइ में केवल वही संगीत सुनने को उचित समझा जो इन चार नियमों का अनुसरण करे :-

यह चार नियम इस प्रकार है ..

- “1 . मसमिअ
- 2 . मुसमूअ
- 3 . मुसतिमिअ
- 4 . आलाति सामाअ
 - 1 . मसमिअ :- गाँड़न वाले नु कहंदे हन जो कि बलग होणा चाहिदा है ना कि लड़का जां औरत
 - 2 . मुसमूअ :- जो कुंज ओह गावे ग ओह फुहरा (अक्षील) ते फज्जूल नहीं होणा चाहिदा
 - 3 . मुसतिमिअ :- ओह जो सुनने : सुणन वाला व् याद - हक्क (रब दी याद) नाल पुर होये ते उस वेले बातिल - ख्याल (अस्ति दे विचार) अधीनन होये ..
 - 4 . आलाति सामाअ :- सामाअ दे आलात चंग रबाब आदि हन यह मजलिस (संगत) विच्च नहीं होणे चाहिदे ”⁹

काजी सललाहु पानीपती (मृत्यु 1810 ईस्वी) ने संगीत सुनाने कि पक्ष में कुछ 'हदीसें' (हज़रात मुहम्मद साहिब की प्रमाणिक उकियाँ) अपनी पुस्तक 'रिसालः सामाअ व् मज़ामीर' में उद्धृत की हैं, जिसके अनुसार गाने कि विषय में निम्नलिखित शर्तें रखीं गई हैं।

- "1 . विषय :- गाने का विषय ऐसा होना चाहिए , जिस में न कोई इस्लाम विरोधी बात हो और न ही किसी जीवित नारी के सौंदर्य की चर्चा हो ।
- 2 . गायक :- गायक संगीत जीवी न हो और सचित्र हो ।
- 3 . श्रोता :- श्रोता इन्द्रजई हो और वासना से वशीभूत ना हो ।
- 4 . समय :- नमाज़ के समय के अतिरिक्त अन्य किसी भी समय गण सुना जा सकता है ।
- 5 . स्थान :- गोष्ठी का आयोजन मकान में होना चाहिए जो ऐकान्त में होना चाहिए ।
- 6 . गोष्ठी में उपस्थित जनसमूह :- गोष्ठी में उपस्थित प्रतेक वयक्ति सचित्र और समानशील हो ।
- 7 . वाय :- सुषिर वाद मज़ामीर कहलाते हैं , बांसुरी , नफीरी और शहनाई जैसे वाय 'मज़ामीर' हैं । हाथ या लकड़ी के आघात से बजने वाले डफ़ , ढोल , नक्कार जैसे वाय मुआज़िफ़ कहलाते हैं " ¹⁰

इस प्रकार हमें इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि सूफी संगीत बहुत बंधनों में बंधा हुआ है । जो इस पवित्रता को कायम रखने कि लिए सूफी संतो द्वारा बनाये गए । अपनी इस पवित्रता कि कारण ही सूफी संगीत शुरुआत से लेकर अब तक प्रतेक वयक्ति कि जीवन में चाहे वह किसी भी धर्म से सम्बन्ध रखता हो , एक अलग व् पाक असतित्वर रखता है ।

1. Contribution of saints and seers to the music of india, Shantsheela sathinathan, p-98
2. मुस्लमान और भारतीय संगीत ,आचार्य ब्रह्मस्पति, p-27
3. हुसैन रचनावली, प्यारा सिंह पदम, p-29
4. अनुवाद, फ़ारसी अनुवाद विशेषांक, अप्रैल-सितम्बर 2010, P-19

5. ਪੰਜਾਬੀ ਸੂਫੀ - ਸਹਿਤ ਸਨੌਰ ਗੁਰਦੇਵ ਸਿੰਹ, p-77
6. Gisudiraz:on Sufism, Syed shah khusro hussaini,p-135
7. Indian music and assessment, John ishrat, p-104
8. ਵਹੀਂ
9. ਪੰਜਾਬੀ ਸੂਫੀ - ਸਹਿਤ ਸਨੌਰ ਗੁਰਦੇਵ ਸਿੰਹ, p-77
10. ਮੁਸਲਮਾਨ ਔਰ ਭਾਰਤੀਯ ਸੱਗੀਤ ,ਆਚਾਰਧ ਬਹਸ਼ਪਤਿ, p-33-34



Tajinder Singh

Asst.Prof